नाम की शक्ति

बिना किसी उद्देश्य के यदि व्यक्ति कोई काम करता है तो वह केवल काम है। इससे उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती है। यदि इस बात को आप ठीक से न समझें हों तो फिर आप समझ लो – आप क्यों भक्ति करते हो, क्या आवश्यकता है भक्ति की, यदि आपको मानसिक शान्ति नहीं है। संसार के झंझटों को आप जो दिन-रात याद करते रहते हैं, उन्हें भुलाने के लिये यदि कोई दवा ग्रहण करनी है तो वह भक्ति है। ये जो आपके शरीर में विचार का ब्लड़ प्रेसर (Blood Pressure), वह High हो गया है उसे यदि आप शान्त करना चाहते हो तो फिर आपको नाम लेना होगा। आप जानते हैं कि जिसको उच्च रक्तचाप की बीमारी हो जाती है उसके दिमाग में बहुत गर्मी हो जाती है। आपके दिमाग में भी बहुत गर्मी है। ऋतु गरम है इसे तो छोड़ो आप, यदि आपका मन शान्त है तो ऋतु चाहे कैसी भी क्यों न रहे, ऋतु आपके हृदय पर उतना असर नहीं डालती जितना कि आपके विचार आप पर असर डालते हैं। तो नाम लेने की आवश्यकता ही क्या है? भजन करने की या भक्ति करने की क्या जरूरत है? यदि जरूरत न होती तो फिर ये आपको जो इतने मन्दिर दिखलाई देते हैं, मस्जिदें दिखलाई देती हैं, गिरजाघर दिखलाई देते हैं और बौद्धों के विहार दिखलाई देते हैं इनमें से एक भी नहीं रहता। कुछ मतलब तो जरूर होगा जिसके कारण इतने पैसे खर्च करके ये मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे आदि बनवाये गये। कोई पूछ बैठे कि किसलिये? नाम के लिये। किसका नाम? बनाने वाले का नाम। भगवान का नाम कहीं नहीं। कई स्थानों पर आप जाकर देखिये कि जो सीढ़ियाँ बनी हुई हैं उन पर भी नाम लिखा हुआ है कि अमुक सेवक की तरफ से यह सीढ़ी बनी या अमुक

सेवक की तरफ से यह आँगन है। वहाँ भगवान का नाम कहीं नहीं! नाम के लिये धर्मशालायें हैं, जब कि धर्मशाला का अर्थ होता है धर्म के लिये स्थान। लेकिन पूछा जाये कि किसकी धर्मशाला है? लिखा रहेगा सरावगी की धर्मशाला, टीबड़ेवाला की धर्मशाला, यानि भगवान का नाम कहीं नहीं; मालूम होता है कि बिना भगवान की कृपा के ही वे धर्मशालायें बन गई।

नाम के पीछे परेशान है ये दुनिया। यह नाम का रोग आया कहाँ से? यह नाम का रोग आया मनुष्य के भीतर के अहंकार के कारण। भीतर एक अभिमान का रोग बैठा हुआ है कि लोग मुझे जाने कि मेरे पास इतना पैसा है; और उस अभिमान की पूर्ति के लिये उसने मन्दिर या अन्य कुछ बनवाया। लेकिन क्या पागल है वह तुलसीदास, जो कहता है – "सुमरी पवनसुत पावन नामु, अपने बस करि राखेहूँ रामु।" एक बार सुमिरन मात्र से, एक बार मुख से भगवान का पवित्र नाम लेने मात्र से वह भगवान भक्त के वश में हो जाता है। पवित्र नाम, कैसे? राम का नाम तो आप भी लेते हैं, हनुमान जी भी नाम लेते थे; लेकिन उनके भीतर नाम लेते ही पवित्रता का भाव, प्रभु की भक्ति का भाव आ जाता था, जबकि आप जब माला जपते हैं, तब माला तो चलती है लेकिन उस माला के चलने से आप कहाँ पहुँचे? यह पता नहीं आपको। जब तक प्यार नहीं तब तक कुछ होता नहीं। केवल नाम लेकर राम को भी वश में कर लेता है भक्त। तो अवश्य ही इस नाम में बहुत बड़ा जादू, बहुत बड़ी शक्ति है कि राम जो सम्पूर्ण संसार का श्रृष्टा है, बनाने वाला है वह भी नाम के वशीभूत होकर अपने भक्त के वश में हो जाता है।

'पावन नामु' – पवित्र नाम। यह नाम पवित्र कैसे हो गया? भावना से पवित्र हो गया। जब तक आपकी भावना शुद्ध नहीं, तब तक पवित्रता

आपसे हजार मील दूरी पर है। एक छोटी-सी बात कहूँ आपसे। आपके घर में एक नौकर है और आपने उसका नाम रामू रख छोड़ा है। आप कहते हो – रामू! और रामू आकर के खड़ा हो जाता है। ऐसे ही जब आप राम का नाम लेते हो तब राम की तस्वीर आपके सम्मुख आती है क्या? नाम पुकारा आपने रामू का, रामू आ गया, किन्तु आपने राम का नाम लिया तो क्या राम की तस्वीर भी आपके सामने आ गई? यदि नहीं आई तो फिर यह कहना होगा जिस तत्परता से आप रामू को पुकारते हो कि मैं रामू को पुकारूँगा तो वह जरूर आयेगा, वह तत्परता आपके भीतर उस समय नहीं रहती जब आप राम को पुकारते हैं जिसके नाम स्मरण मात्र से दर्शन हो आपको। एक और विशेषता है इस नाम में। क्या विशेषता है? देखो – 'नाम' जो है न, वह पहले आपको शिक्षा देता है। वह शिक्षा यह है – 'ना' 'म' यानि 'ना' 'मैं'। ना, 'मैं' नहीं जो कुछ है सो 'तू' है। 'मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोय।' तूने तेरी भक्ति दी और उस भक्ति के कारण ही मैं तेरा नाम ले पाया। किसी ने कह दिया कि राम का नाम ले और मैंने यदि लिया तो यह मैंने किसी की बात मानकर नाम लिया, अपनी तरफ से तो मैंने नाम लिया नहीं। जब आप अपनी तरफ से प्रभु को याद करोगे तो आपका मन मन्दिर, आपका हृदय, आपकी वाणी पवित्र हो जायेगी। केवल आप ही नहीं आपका सम्पूर्ण परिवार, सात पीढ़ी तक पवित्र हो जायेगा – यदि आपने राम के नाम को पवित्रता के साथ, प्रेम के साथ, भाव के साथ लिया है तो वह नाम बेकार नहीं जाता। 'रामम् केवल नाम प्यारा, जान लेहु जे जाननहारा' । राम को केवल नाम प्यारा है, जिसे समझना है वह समझ ले।

आपको क्या समझना है? आपको यह समझना है कि हमने जो भी भजन गाये, बातें सुनी वे सब आपने सुन तो लिया किन्तु उसके अनुसार क्या

कुछ काम भी हुआ या बात यूँ ही हवा में उड़ गई। आप आये, यह तो मेहरबानी है आपकी। मेहरबानी क्यों कहा गया? वह इसलिये कि इस जे.बी. नगर की जेबी में भी बहुत से आदमी रहते हैं। जेबी जानते हैं न आप? (Pocket) पॉकेट को कहते हैं और फिर मलाड़ की तो बात ही क्या है? मलाड़ तो मलीदा है भगवान के नाम का और मलीदा कहते हैं राजस्थानी भाषा में चूरमा को। अब अगर कोई आदमी अपनी पॉकेट में चूरमा डाल ले और खाता जाये, किसी को पता नहीं चलता यहाँ क्या होता है? आप एक राम का नाम लो तो घरवालों को मालूम होना चाहिये कि हाँ, हम नाम लेते हैं। यह तो गलती हुई ना? यह तो आपकी गलती हुई। देखो, जिह्वा से नाम लेना, यह तो प्रारम्भिक शुरूआत का काम है। जैसे बच्चा अभी लिखना नहीं जानता तो वह पट्टी पर क्या करता है कि ऐसे ही टेढ़ी-मेढ़ी लकीर खींचता है। लेकिन जब उसको अक्षर का ज्ञान करवाया जाता है तो इन टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों को ही घुमा फिरा कर उसे 'अ' लिखना सिखाया जाता है। वैसे-ही यह टेढ़ा मन, सीधी भावना, सम्मुख प्रभु का भाव, यह हुआ 'अ' ।

यह जो हमारा टेढ़ा मन है उसमें बड़ी-बड़ी गुत्थियाँ पड़ी हुई हैं – निरर्थक विचारों की, दुनिया के व्यवहार की मन में इतनी घुटन आपके भीतर बैठी हुई है कि राम कहते हैं कि – नाम तो मेरा लेते हो लेकिन यह घुटन के लिये लेते हो या अपने मन को सीधा-सादा बनाने के लिये लेते हो। तो यह आपको समझ रखना होगा कि नाम जब लेना है तो बिना जीभ हिलाये लेना है। जीभ का क्या काम? आप कहेंगे कि बिना जीभ हिलाये तो राम का नाम नहीं निकलता। तो आपको समझना होगा कि प्रारम्भ में तो अक्षर जो होंगे वे टेढ़े-मेढ़े होंगे और कुछ दिन तक जब आप उसकी साधना करेंगे, हाथ जब बैठ जायेगा तो वही अक्षर ऐसा होगा कि लोग कहेंगे कि अक्षर क्या

है, ये तो मोती की तरह चमकती हुई चीज है। क्या मतलब इसका? देखो जब तक नाभी से राम का नाम उच्चारित न हो, तब तक प्रारम्भ में जीभ का ही सहारा लेना पड़ता है। लेकिन धीरे-धीरे आप देखेंगे कि वह आवाज नाभी से उठने लगी, अब आपको जीभ हिलाने की जरूरत नहीं। ऐसी ध्वनि उठेगी कि आप मस्त हो जाओगे।

आपने केवल यही सुना है कि भगवान कृष्ण जब बाँसुरी बजाते थे तो गोपियाँ अपना काम छोड़कर चली आती थी। 'बाँसुरी' शब्द को आप देखो तो 'बाँस' पहले है और 'री' बाद में है। बाँसुरी तो पहले 'बाँस' है और जहाँ उससे आवाज फूँकी गई तो वह बाँस नहीं रही, वह बाँसुरी हो गई। इसी प्रकार प्रारम्भ में जब आप नाम लेते हो तो बाँस की तरह है लेकिन धीरे-धीरे वह बाँस ही बाँसुरी का रूप धारण कर लेता है। तो बात यह है कि गोपियों को बुलाने के लिये भगवान ने बाँसुरी बजाई और भगवान को बुलाने के लिये आपको भी बाँसुरी बजानी होगी। वह बाँसुरी क्या है? वह बाँसुरी है भगवान का नाम, प्रेम।

राम का नाम कैसे पुकारा जाता है, यह भी बतला दूँ आपको। आप कहेंगे कि राम नाम तो हम रोज लेते हैं। आप तो माला लेकर खूब घुमा देते हो। माला घुमाने से ही काम अगर हो जाता तो इतनी बातें कहने की क्या जरूरत? पुकारने वाले के ह्रदय में कुछ प्रेम की भावना होनी चाहिये। आप सुनो, मैं आपके सम्मुख पुकारता हूँ यदि आपकी भावना उसके साथ काम कर सके तो आप समझो कि इस तरह पुकारा जाता है। उसी प्रकार यदि आप कभी अभ्यास करो तो फिर आपको अवश्य आनन्द आयेगा। हम पुकारेंगे सुनो – राम, राऽऽम, राऽऽऽऽम, राऽऽऽऽऽम... देखो, ऐसे रोंगटे

खड़े हो जायेंगे। केवल पुकारने मात्र से सम्पूर्ण शरीर के रोंयें जो हैं खड़े हो जायेंगे। जिस दिन आपके भीतर प्रेम से प्रभु के नाम की ध्वनि निकलेगी आपका रोम-रोम जो है वह राम के नाम को पुकारने लगेगा।

मैं पुकारूँ और तुम न आओ? या तो तुम निष्ठुर हो या मेरी पुकार में वह दर्द नहीं कि तुम्हें खींच सकूँ? मेरे भीतर वह भाव नहीं कि मैं तुम्हें बुला सकूँ, अपना कह सकूँ, अपना बना सकूँ। यह नाम की महिमा है। मैं प्यार से तुम्हें बुलाता हूँ, पुकारता हूँ। तुम जाओगे कहाँ? है तुममें शक्ति? इस भावना से जब मनुष्य प्रभु को याद करता है तो वह ठहर नहीं सकता। प्रभु तो सर्वव्यापी है, कहीं से आने-जाने की बात नहीं। वह आकाश में है, वह वायु में है, वह अग्नि में है, वह जल में है, वह स्थल में है। बार-बार वही कहानी कहने से कहानी का आनन्द नहीं आता और सुनने वाला भी यह समझता है कि एक ही कहानी बार-बार क्यों कही जा रही है कि वह सब जगह है। प्रह्लाद का पिता जब अत्याचार करके थक गया और आखिरी में उसने यही विचार किया कि अब मैं इस तलवार से इसका प्राणान्त करूँगा। खड़ा है पिता हाथ में तलवार लिये, खड़ा है पुत्र प्रभु के नाम के बल पर। कौन सहायक? जब पिता ही पुत्र की हत्या करने में लगा है तो पुत्र की रक्षा करने वाला कौन? वही राम। पिता खड़ा है और कहता है कि कहाँ है तेरा राम? तेरा राम कहाँ है? तुझे इतना कष्ट दिया गया और कोई भी कष्ट कारगर नहीं हुआ। अब तू ही बतला कि तेरा राम कहाँ है? वह कहता है – 'तो में' यानि तुझ में है मेरा राम और 'मो में' यानि मुझ में है। नहीं अगर ऐसा कहता, तो वह भगवान का भक्त नहीं। वह भक्त है इसलिये उसने कहा कि वह तुझ में है, फिर मुझ में है। पिता पूछता है और कहाँ है राम? तलवार में है? खड्ग में है? और इस खम्भे में भी है? कहता है, हाँ। वह तलवार निकाल कर

खम्भे पर आघात करता है। भगवान ने भी सोचा कि बहुत दिन हो गये मेरे बच्चे को कष्ट पाते हुये, आज इसके कष्ट का अन्त कर देना है। आप समझो, किसी बच्चे को बार-बार बहुत कष्ट दिया जाये और वह बच्चा जो दिन-रात राम-राम की रट लगाये बैठा हुआ है, तो राम का हृदय विदीर्ण हो जाता है, फटने लगता है कि कोई ऐसा अवसर आये जिस समय कि यह दुष्ट कुछ ऐसी क्रिया करे कि मैं अपनी शक्ति दिखलाऊँ। तलवार का आघात खम्भे पर हुआ और नरसिंह के रूप में भगवान प्रगट हुये। लेकिन उसने भी ऐसी प्रतिज्ञा कर रखी थी कि जिसके फलस्वरूप उसको कोई मार नहीं सकता। वरदान के अनुसार न वह दिन में मरे और न रात में, तो उसे संध्या के समय मारा; न वह घर में मरे और न बाहर, तो उसे चौखट पर रख कर मारा; न वह मनुष्य से मरे और न पशु से, तो उसे नरसिंह रूप में मारा। ऐसे ही भगवान का दिया हुआ वरदान भी रह गया और भक्त के शत्रु का भी नाश हो गया।

देखो, युगों से उसकी कहानी चली आ रही है। वह राम जो अवतारी था वह तो त्रेता में हुआ और वह राम जो कि सम्पूर्ण जगत में व्याप्त है उसकी शक्ति तो सतयुग के पहले से ही कार्य कर रही थी। भगवान के भक्त में इतनी शक्ति, इतना बल रहता है कि वह उसके नाम का आधार लेकर अभय होकर रहता है। हमें उस राम के प्यार की आवाज को कुछ लोगों तक ही सीमित नहीं रखनी है, बल्कि इस प्यार की आवाज को सम्पूर्ण संसार में पहुँचानी है। मैं चाहता हूँ कि यहाँ जो भी आयें हैं उन सबको यह इच्छा रखनी चाहिये कि उन्हें भी बोलने का अवसर मिले। यह नहीं होना चाहिये कि दो या चार जन ही बोलें। देखो, जहाँ कुश्ती होती है, अगर कोई अखाड़ेबाज आदमी होता है तो वह कहता है कि हम भी लड़ेंगे भई। उसी तरह हमको भी कुछ

बोलना है, ऐसी इच्छा होनी चाहिये आप सब में, क्योंकि कुश्ती लड़े बिना कुश्ती के दाँव पेंच नहीं आते। जो दूसरों की बातें सुनकर ही खुश होते हैं और अपनी बात कहने के लिये तैयार नहीं, तो वे बोलने का दाँव पेंच कैसे सीख पायेंगे। नाम के दाँव-पेंच में केवल एक बात बतलाई – ना मैं यानि मैं नहीं हूँ, जो कुछ है सो तू-ही।

लेकिन यह सब बात कहकर भी मुझे सन्तोष नहीं होता। मैं जानता हूँ आपको। ये छोटे-छोटे पग हैं। ये सत्संगियों के छोटे-छोटे पैर हैं। समय आ रहा है, आप हताश न हों, निराश न हों। आप सबको भी यही काम करना है जो काम इस शरीर से किया जा रहा है। आप यह मत समझो कि हमारा काम केवल सुनना या सुनाना है। नहीं, अगर सद्गुरु की कृपा से हमें वाणी मिली है तो सद्गुरु के ऋण से उऋण होने का एक रास्ता है कि जो कुछ सद्गुरु ने बताया है हमें, उसे हम गाँव-गाँव, शहर-शहर, गली-गली में प्रभु के प्रेम की, भक्ति की, भाव की बातों को फैलायें, जहाँ तक हमारी शक्ति से हो पाये। दुनिया हँसेगी, हँसेगी ही दुनिया क्योंकि वह तो चाहती ही नहीं कि आप आगे बढ़ें। कहीं ये भगवान का भक्त न बन जाये, इसलिये हँस-हँसकर आपको पीछे हटाने की चेष्टा करेगी। लेकिन आपको आगे बढ़ना है।

आप लोगों से यही कहना है कि केवल सुनकर के न जाओ, जो कुछ तुम्हें मिला है उसे बाँटकर खाओ। फैलाओ, जितनी आपकी शक्ति है फैलाओ और वह फैलेगा कैसे? केवल आपकी चेष्टा से नहीं, प्रभु की अज्ञात शक्ति से। वह कहता है जो मेरा नाम लेता है उसको मैं अपनी शक्ति देता हूँ, नहीं तो वह नाम ले नहीं सकता। प्राणी दुनिया की निरर्थक बातें बहुत कर सकता है लेकिन प्रभु का नाम नहीं ले सकता। ये तो भाव की बातें हैं। भाव

की भिक्षा कौन देगा? कौन देता है ऐसे? एक भिखारी आपसे दो पैसे लेना चाहता है तो बड़ी करुणा से आपसे बोलता है। भाव मिलेगा आपको। यह बात नहीं कि भाव नहीं मिलेगा लेकिन वो करुणा का भाव तो आना चाहिये आपमें और जब तक आपके भीतर दया नहीं, करुणा नहीं, वह आकर्षण शक्ति नहीं जो भगवान को खींच सके तब तक ऐसे ही चलता रहेगा। माँ जैसे बच्चे का ध्यान बार-बार रखती है, व्याकुल रहती है बच्चे के खान-पान, क्रिया कलापों के प्रति, वैसी-ही व्याकुलता हममें जब आयेगी तो वह अपने आप खींचा चला आयेगा। बस।

आनन्द - आनन्द - आनन्द।

❋❋❋